बद्द प्राचीरों से मुक्ति के संघर्ष की गाथा

डॉ.नयना
डेलीवाला
अहमदाबाद(गुजरात
संपर्क---9327064948/9016478282

रामदरस मिश्र के उपन्यास पानी के प्राचीर में जीवन और कला-रुप के अन्वेषण की नयी आत्म चेतना के दर्शन होते है। उपन्यास में पूर्वी उत्तर प्रदेश के अभाव ग्रस्त गाँव की संघर्षशील चेतना को ठोस सामाजिक,राजनीतिक स्थितियों को मूर्त अनुभव के रुप में प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि पानी के प्राचीर में प्राचीरों से घिरे होने के बावजूद घुटन और कुंठा नहीं है।बल्कि उसमें जिंदगी के वैविध्य और विस्तार तथा अंतर्विरोधी तत्वों की द्वन्द्वात्मक गतिशीलता का चित्रण है। गांव के तीज त्यौहार, गीत-संगीत, प्रकृति- चित्र आदि आंचलिक उपन्यास के अनिवार्य तत्व के रुप में गूंथे गये हैं।यह उपन्यास 1961 में प्रकाशित हुआ है,इसमें गोरखपुर जिले में राप्ती और गोर्रा नदियों की धाराओं से घिरा एक विशाल भूभाग सजीव हो उठा है।लेखक इस भूभाग के चप्पे-चप्पे से,खेत-खलिहानों से,झोंपड़ी-झोंपड़ी से परिचित हैषउसने वहां के जन-जन के सुख-दुःख को अपनी अनुभव संवेदना से ग्रहण किया है।यह एक ऐसे गांव की कथा है,जिसका बाहर की दुनिया से की जीवन्त और रचनात्मक संबंध ही नहीं रह गया।बंधे हुए जल की भाँति गाँव का जीवन ठहर गया है।चारों ओर संघर्ष,तनाव,मार काट की वैमनस्यपूर्ण प्रवृति नज़र आती है।

इस उपन्यास में पांडेपुरवा गांव का चित्रण सजीव बन पड़ा है।लेखक ने भारतीय मुक्ति संघर्ष में ग्रामीणों की भागीदारी को गहराई से अंकित किया है। जिससे हमें भारतीय राजनाति एवं राष्ट्रीय धारा में ग्रामीण जनता की साझेदारी का पता चलता है। राजनीतिक चेतना का उभार गांव के गरीब लोगों में स्पष्ट झलकता है।गांव में स्वतंत्रता संग्राम में अपनी भागीदारी दिखाने तथा गांधीजी के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करने के लिये जुलूस निकलता है,जिसकी अगुआई ब्राह्मण टोली के नेता गनपति पांडे करता है।उनके सहयोगी---हरिजन नेताफेंकू,निरबल तेली,भीखन गड़ेरी और दधिबल यादव आदि करते है।रग्धू बाबा गांधीजी के प्रभाव में बेनी काका को बताते है----- **"तू जे बा से नगीचे क मुंह पा के जवने होला तवने बकि देल।बा केहू दुनिया में गान्हींजी के जोड़ का,गान्हींजी अवतारी आदमी हवें।मुरदा के जिया देलें।जेल में से उड़ि जालें।कुआ में कूदि के पचास कोस दूर जा के उतरालें।गान्हींजी सुराज जरूर लीहें तू बुझले का बाट। "**

गांव में जन जागरण की अनेको घटनाएँ घटती हैं, उदा सन1942 की क्रांति।कोंग्रेसियों द्वारा स्चेशन फूंकने की,बार-बार गांव में जुलूस निकालना।पांडेपुरवा मेंजहां ऊंची-नीची जातियों के गनपति-फेंकू जैसे नेता लोग स्वाधीनता के प्रति जागरूक है,वहां नीरू जैसे गंभीर देश भक्त चुपके-चुपके ही अपने कार्य और उद्देश्य की सबल भूमिका निभाते हैं।नीरू गांव का प्रकाश पुंज है,वह किसी का मुखापेक्षी न होकर राष्ट्रीय चेतना से आंदोलित है।जमींदार गजेन्द्रसिंह जैसे प्रतिक्रियावादी के पास कारिन्दे की नौकरी करते हुए भी क्रांतिवादियों के साथगुप्त मंत्रणा कर स्टेशन फूंकने की योजना बनाता है कि –"आप लोग कल स्टेशन फूंकिये।मुझे बाबु गजेन्द्रसिंह के ईमानदार नौकर की तरह स्टेशन की रक्षा करनी चाहिये।,नहीं सरकार कल इन्हें पीस डालेगी।सो मैं बाद में बंदूक लिए दौड़ा हुआ आऊंगा,आप लोग तब तक भाग जाइए।"

इस उपन्यास में भारतीय गावों की राजनीति में आये बदलाव स्पष्ट दिखाइ देते है।आज गांव जातीय आधार पर विभक्त है।आज की राजनीतिक व्यवस्था में जातिवाद को अत्यंत प्रोत्साहन मिला है,जिससे हमारी राष्ट्रीय राजनीति दूषित हुई है।स्वाधीनता से पूर्व लोग जिस जातिवाद का विरोध करते थे,स्वतंत्रता के पश्चात पुनः शह देने लगे है,क्योंकि चुनवों का परिणाम जन जातियों के आधार पर आंका जाता है।

** गतिशीलता मानव जीवन को नई-नई मुद्राएं देती रहती है।परिवर्तन प्रकृति का अटूट नियम है। मानव जीवन और मूल्य परिवर्तनीय है, इसी परिवर्तनीय प्रक्रिया के कारण मनुष्य समाज का ढ़ांचा बदलता है। मानव के आपसी संबंध,रीति-नीतियां,क्रिया-कलापों,,मनायताओं आदि का संबंध जीवन की विशिष्ट पद्धति से है,जो आदर्शों ,सिद्धांतो पर आधारित होती है, उसे जीवन मूल्य कहा जाता है। संक्रमण काल में मूल्य संक्रमित होते रहते है।इसमें ग्राम जीवन के सामाजिक मूल्यों की टूटन का स्वरुप उभर कर आता है।बदलते सामाजिक परिवेश में दगाबाजी,सम्मान प्रतिष्ठा के स्थान पर नंगाई दि के भाव तीव्रता से उबरे है।गांव जीवन में

संगठन सहकार नाम शे ष रह गया है। लोग स्वार्थवश औरों की जमान अपने नाम पर करवाना चाहते है।शत्रुता यहां तक बढ़ गई है कि एक-दूसरे की झोंपड़ी में आग लगा देते हैं।कहीं बैल चोरी करते है।किसी के घर सेंध मार देते है।

पांडेपुरवा गांव में भी प्रेम सद्भावना का स्थान नंगई ने ले लिया है।सामाजिक अंतःसूत्रता बिखर गई है।व्यक्ति मात्र निजी स्वार्थ की बर्बरता को जी रहा है।बैजनैथ गांव भर का दोस्त भी और दुश्मन भी था।सब लोग उसकी काली करतूतों से ड़रते थे।अगर गांव का कोई गरीब उसे कुछ भला बुरा कह देता तो वह उस समय कुछ न बोलता,किन्तु बाद में वह **----"उसके घर सेंध लगा देता,खलिहान में या धारी में आग लगा देता,बैल चुरा लेता,कच्चे-पक्के खेत काट लेता।"**इस प्रकार गांव में सामुहिकता की भावना टूट रही है। **मिश्रजी के शब्दो में--- 'कभी इसकी चोरी,कबी उसकी चोरी,कभी इसका गृह दाह खबी उसका।ऐसा महसूस हो रहा था कि गांव में कुछ खून होकर रहेगा।'**

** हिंदी के ग्रामजीवनपरक उपन्यासों में गांव और मनुष्य को यथार्थ परिवेश एवं तटस्थ द्रष्टि से देखने का प्रयास किया गया है।परंपराओं के विरोध ओवं मूल्यों के अवमूल्यन के कारणनई नैतिकता बड़ी तीव्रता से पनप रही है।शहर की भाँति नई पीढ़ी के ग्राम युवक के लिये हर संदर्भ अर्थहान हो गये हैं और नैतिक मान्यताएँ,सारी-की-सारी आचार संहिताएं खओखली वं जर्जर हो गई है।वह जितना सार्थक अर्थ पाने की कोशिष करता है, उसमें व्यर्थता का बोध गहराता जाता है। और वह असमर्थ जोता जा रहा है।पांडेपुरवा की संध्या अपनी ही द्रष्टि से नैतिक-अनैतिक स्थितियों का वर्णन करती है।आगे पढ़ाई के लिये शहर आ जाती है।बचपन का प्रेमी नीरू जब उसे गोरखपुर में मिलता है, और गांव लौटने की बात करता है।उसके उत्तर में गांव के सामजिक परिवेश और उसमें व्याप्त विसंगतियों के प्रति संध्या की प्रतिक्रिया माननीय है---- "**गांव में क्या रखा है नीरू, देखो न सखियों के नाम पर गेंदा,चमेली जैसी आवारा छोकरियां है। गांव के लौंडे है जो बिंदिया चमारिन के पीछा पड़े रहते है।गांव की लड़कियों पर बुरी निगाहें गढ़ाये फिरते है।गांव के लोग चोरी करते हैं,खेत ऊखाड़ते है,घर फूंकते है ,चुगली करते हैं— ऐसे गांव में क्या रखा हैऔर तो और दिल बहलाने का कोई तरीका नहीं।किसी से बात करो तो वह दूसरों की शिकायत करता है।औरतें है तो उसे दूसरे की पोल खोलने में हा मजा आता है।" यही है पांडेपुरवा का यथार्थ चित्र।**

** अंचल का साधारण व्यक्ति अपनी वैयक्तिक स्थिति समजने लगा है।व्यक्तिगत प्रवृति के कारण न वह किसी समाज से जुड़ पाता है न व्यक्ति से।सामाजिक संदर्भों से अलगाव और व्यक्ति का अपने में भटकाव के पीछे आधुनिकताजन्य भौतिक जीवन द्रष्टि कार्य करती है।स्वार्थ ही उसका मूल्य और मापदंड है, उसीक आधार पर अन्य सामाजिक,धार्मिक,नैतिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ जुड़ना चाहता है।

"हर स्तर पर व्यक्ति अपनी वैयक्तिकता खोए बिना व्यापक सेमाजिक संदर्भों से जुड़ने की निरंतर चेष्टा करता है।आत्महित की द्रष्टि सेवह सामाजिक अनुशासन स्वीकार करता है तो परिस्थितियों से विवश होकर विक्षुब्ध,कुंठित,अपमानित एवं समाज उपेक्षित होकर वह विद्रोह भी करता है यह विद्रोह अंतर-बाह्य दोनों ही सतरों पर होता है जो अनेक समस्याओं को जन्म देता है।"उदा---नीरू अपने छोटे भाई केसू के वाक्यों को सूनकर जाग जाता है,अन्यथा वह अपने आर्थिक अभावों के कारण भ्रष्टाचारी तौर-तरीकों से पैसे जुटाने में लगा था।आदर्श और यथार्थ के द्वंद्व में ही वह अपने भाई केसू को आश्वस्त करते हुए कहता है----- **"विश्वास मान केसू , अब तेरी पढ़ाई में किसानों के रक्त की गंध नहीं आयेगी।"**

** स्त्री-पुरुष संबंधों के विविध यामों को भी लेखक ने खोला है।आर्थिक समसया के फल स्वरुप होनेवाले तनावों का जिक्र किये बिना उपन्यास अदुरा लगता है।नीरू की नवविवाहिता पत्नी उसकी पेंट से रुपये निकालना शुरु करती और नीरू देखता है तो पूछता है यह क्या कर रही हो,पत्नी उपालंभ से कहती है ---**ये सारे पैसे आप परायें लोगों पर उड़ा देते हैं।**

** भारतीय समाज में अनमेल विवाह सामाजिक दोष है।सदैव नारी कै शोषण हुआ है।गरीबी व अशिक्षा की चक्की में पिसते हुए मजबुर मां-बापदहाज से बचने के लिए फूल-सी कुमारी को किसी वृद्ध के गले लटका देते है,लड़की कुढ़-कुढ़कर जीती है।उदा--- **बैजू दहेज न पाने पर अपनी बहनगेंदा का विवाह एक बूढ़े शुक्ल के साथ कर देता है।**

ISSN : 2583-2948

** नारी जागरण का एक बिगुल बिंदिया भी बजाती है।जब बिंदिया देखती है कि मुखिया के चौकीदार उसकी झोंपड़ी मुखिया के कहने पर उजाड़ रहे होते है तो वह गरजकर कहती है----**यह क्या करते हो,गरीब दुखिया की झोंपड़ी उजाड़नेमें भी तुम लोग सारी बहादुरी दिखा रहे हो।**

कुल मिलाकर हम कह सकते है कि इस उपन्यास में तत्कालीन युगीन समस्याओं,रीति–रिवाज, लोग,जमीन,प्रकृति को यथार्थ के धरातल पर रखकर भी नव जागरण का संदेश दिया है। स्वाधिकार के लिये नगर की ओर उन्मुख होने की बात भी परिलक्षित होती है। इस तड़पते प्रदेश के लोगों की अज्ञानता,अभाव,अशिक्षा उन्हें प्राचीरों से मुक्त नहीं होने देती,पर लेखक का जीवट है उसे पार ले जाने का।